Jankriti International Magazine
Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

शोध आलेख

हरदान हर्ष की कहानियों में मानवीय पक्ष

प्रकाश नेभनानी

एक साहित्यकार का जीवन व्यापक जीवनानुभूति लिए होता है। वह अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को नई दिशा देने का प्रयास करता है। प्रगतिशील चेतना सम्पन्न और समाजोन्मुखी साहित्य सृजन करने वाले रचनाकारों में हरदान हर्ष का महत्त्वपूर्ण स्थान है। श्री हर्ष ने गद्य एवं पद्य साहित्य में विपुल सृजन किया है।

गद्य साहित्य में मानवीय संवेदना बड़े व्यापक धरातल पर प्रस्तुत होती है। संवेदनशीलता सच्चे रचनाकार की पहचान है। कथा साहित्य में संवेदना को व्यक्त करने का व्यापक धरातल अथवा कैनवास होता है। कथा साहित्य में संवेदना की तीव्रता ज्यादा देखने को मिलती है।

'संवेदना' शब्द आज मनोविज्ञान और साहित्य दोनों क्षेत्रों में प्रयोग में लाया जाता है। साहित्य में इसका अर्थ मानव मन के अन्तस् में स्थित उदात्त वृत्तियों से लिया जाता है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, अतः उसकी संवेदना व्यापकता लिए हुए है। किन्तु, सामाजिक–जीवन की जटिलताओं ने मनुष्य की संवेदनाओं पर अतिक्रमण भी किया है, जिससे उसके व्यवहार में परिवर्तन दृष्टिगत होता है और एक सजग रचनाकार उस संवेदनात्मक अतिक्रमण को चिन्हित करते हुए उसे कथा के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है। उसकी संवेदना जितनी उदात्त, व्यापक और महान होती है उसकी कृति उतनी ही सफल और संप्रेषण करने में समर्थ होती है।

संवेदना मानव के अन्तरतम् की सर्वाधिक पवित्र भावना है। वैसे भी जीवन में सुख–दुख की प्रधानता रहती है, परन्तु दुख की भावना के प्राधान्य को देखते हुए संवेदना का संबंध मुख्यतः दुखपूर्ण भावनाओं से ही जोड़ कर देखने की परम्परा है।

संवेदना मनुष्यता की पहचान का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। मनुष्य का संवेदनशील होना ही उसे मानव प्रमाणित करता है। वर्तमान बाजारीकरण, भूमण्डलीकरण, भौतिकवाद, बुद्धिवाद का दौर मनुष्य को दिन प्रतिदिन संवेदनहीन बना रहा है। मनुष्य अपने निकटतम व्यक्ति के सुख–दुख से

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

अपरिचित तो है ही वह अपने पारिवारिक संबंधों से भी दूर होता जा रहा है।

डॉ. सुरेश सिन्हा के अनुसार, ''साहित्य में 'संवेदना' से अभिप्राय वह अनुभूति प्रवणता है जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रभावों को ग्रहण करने की क्षमता से पूरित होती है। इसका अर्थ यह भी होता है कि कोई साहित्य किन भावनाओं की प्रतीति हमें करा सकता है या मानव अस्तित्व की बुनियादी विशेषताएं थीं। ..... नई अनुभूति, नई भाषिक अर्थवत्ता, अनुभवों का नया संयोजन तथा मानव संबंधों के परिवर्तन की सूक्ष्म परख आदि से ही साहित्य की संवेदना स्पष्ट होती है। भाषा, भाव और प्रेरणा तीनों ही प्रत्येक काल में साहित्य की संवेदना को नई अर्थवत्ता प्रदान करते हैं।''[1]

डॉ. मुकुन्द द्विवेदी के शब्दों में, ''साहित्यकार संवेदनशील मनुष्य होता है, वह समाज में रहता है। सामाजिक परिस्थितियां उसे प्रभावित करती हैं। अतः वह अपनी अभिव्यक्ति के लिए साहित्य की किसी भी विधा को क्यों न चुने, उसमें युग चेतना के स्वर उभर ही आते हैं। किसी युग विशेष की चेतना में भी कई धाराएँ पाई जाती हैं। इसका कारण यह है कि एक ही युग में भिन्न–भिन्न व्यक्तियों द्वारा वह उनकी निजी संवेदना के अनुरूप ग्रहण की जाती है। संवेदना के स्तरों में विविध स्तर होने के भी कई कारण हैं, जिनमें सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियां प्रमुख हैं। लेखक की एक अलग संवेदना होती है, जिसके द्वारा वह साहित्य में अपने को अभिव्यक्त करता है।''[2]

''हमारा कथा साहित्य का परिप्रेक्ष्य उन मानव मूल्यों पर केन्द्रित होता है, जो मनुष्य को पूरे सामाजिक क्रियाकलाप का केन्द्र और नियामक निर्धारण तत्त्व मानकर चलते हैं। आजादी के पहले का कथा साहित्य मानव मूल्यों से, मानवीय सोच की परम्परा से इतने ठोस रूप से जुड़ा हुआ मिलता है कि पाठक के सामने सभी सामाजिक विषयों और प्रश्नों की सार्थकता को वह इतिहास में रखकर मनुष्य की जरूरतों, आशाओं और आकांक्षाओं की रोशनी में निर्धारित करता है।''[3]

''आठवें दशक से शुरू होने वाले प्रगतिशील जनवादी कथा का नया दौर मानव मूल्यों को फिर से प्रतिष्ठित करने की कोशिश करता है।''[4]

राजस्थान के कहानीकार हरदान हर्ष ने अपनी कहानियों के माध्यम से समकालीन जीवन के यथार्थ को संवेदनात्मक धरातल पर प्रस्तुत किया है। हरदान हर्ष वस्तुतः मानवीय मूल्यों के रचनाकार हैं। उनकी

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

कहानियों में बदलते मानवीय संबंधों को, संवेदनाओं को सशक्त अभिव्यक्ति मिली है।

हरदान हर्ष भी प्रगतिशील विचारों के प्रबल समर्थक हैं। वे प्रेमचन्द की परम्परा का अनुसरण करते हुए आम आदमी की पीड़ा को, उनके मानवीय पक्ष को संवेदना के धरातल पर अभिव्यक्त करते हैं। उनकी कहानियां प्रमुखतः सामान्य जीवन जी रहे पात्रों की कहानी कहती हैं।

बदलती परिस्थितियों ने मध्यम वर्ग को ज्यादा प्रभावित किया है। उनके संबंधों में आए बदलाव का मुख्य कारण वे परिस्थितियां हैं, जिनके कारण आम आदमी अपने संबंधों को मानवीय दृष्टि से पूर्णतः निभा पाने में असफल या कहें असमर्थ होता है। संबधों में आए बदलावों को एवं आम आदमी की पीड़ा को व्यक्त करने में हरदान हर्ष अपने लेखकीय कर्म की सार्थकता स्वीकारते हैं।

हर्ष जी की कहानियों में अंचल विशेष का जनजीवन और वहां के लोगों की संवेदनाएं सघनता से मुखरित होती हैं।

संबंधों के खोखलेपन और स्वार्थपरता को निम्न उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है–

'मांगपत्र' कहानी का नायक बंशीधर समझ रहा था, ''इसका मतलब चाचा एक मंजा हुआ बहुरूपिया निकला। शादी के अवसर पर निवेश कर उसने मुझे बौना बना दिया। भावनाओं के खूंटे से बाँधकर उसने मेरे गले रस्सी डाल दी। मैं? मेरा वजूद? एक पालतू बैल जो जीवन भर उसके गृहस्थ की गाड़ी को खींचता रहेगा। बलि का बकरा। कसाई बकरे को खूब अच्छा–अच्छा इसलिए खिलाता है कि उसका गोश्त बढ़ जाएगा और हलाल करने पर अच्छी खासी कीमत मिल जायेगी। मैं और बलि का बकरा?''[5]

आधुनिक युग में संबंधों की स्वार्थपरता पर यह एक गहरा कटाक्ष है। संबंध अब अपने अर्थ खोते जा रहे हैं। हर व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए संबंधों का उपयोग करने लगा है। 'मांगपत्र' कहानी समकालीन जीवन में मूल्य विघटन का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करती है।

इसी प्रकार आज समाज में वृद्धों की समस्या एक गंभीर समस्या बन चुकी है। वे अकेलेपन की त्रासदी को झेलने के लिए विवश हैं। अति महत्त्वाकांक्षाओं ने पारिवारिक मूल्यों का ह्रास किया है। हरदान हर्ष इस समस्या की ओर भी अत्यंत गंभीरता से विचार करते हैं। 'आँखों से चिपका चेहरा' कहानी में वे लिखते हैं, ''मेरे लिए दोनों बेटों को बड़ा आदमी बनाने का अर्थ था–उन्हें

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

पब्लिक स्कूल में पढ़ाते हुए डाक्टर या इंजीनियर बनाना। इस उद्देश्य में मैं आशा से कहीं अधिक सफल रहा। प्रशांत ने एम.बी.बी. एस. कर लिया था। फिर एम.डी.। आज से दस वर्ष पूर्व न्यूरोलोजी में दक्षता प्राप्त करने अमेरिका गया था और आज तक नहीं लौटा। और, वह लौटेगा भी नहीं। उसने लिख दिया है– ''डेड। यहां इंडिया से बेहतर तरक्की के अवसर हैं। जीवन की सभी आम सुविधाएं यहां उपलब्ध हैं। उच्च जीवन स्तर है यहां का। आपको जब भी रुपयों की आवश्यकता हो, लिख देना। मैं तुरन्त भेज दूंगा।'' वह समझता है– इस वृद्ध अवस्था में मुझे रुपयों की जरूरत है।''[6]

हरदान हर्ष एक संवेदनशील रचनाकार की तरह समाज की विसंगतियों की ओर सूक्ष्मता से दृष्टिपात करते हैं। आज का युवा बिना श्रम के ही आराम की जिंदगी जीना चाहता है। उसे अपने माता–पिता की भावनाओं की कोई कद्र नहीं है। युवाओं की बदलती प्रवृत्ति की ओर हरदान हर्ष 'पिघलते हिमखण्ड' कहानी में पाठकों का ध्यान केन्द्रित करने में सफल हुए हैं–

''शारदा की आखिरी आशा भी बेकार गई। रणजीत को न सुधरना था, वह नहीं सुधरा। अब घर में राधे की स्थिति बदतर होती जा रही थी। रणजीत की नजर दुकान पर थी। गल्ले से रुपये लेते समय वह किसी तरह का अंकुश बर्दाश्त नहीं करता था। एक दिन अति हुई। राधे के सिर पर आसमान टूट पड़ा। मर्यादाओं की सब दीवारें ढह गईं। गल्ले से रुपये लेते वक्त रणजीत का राधे ने प्रतिरोध क्या किया कि रणजीत का हाथ उसके मुँह पर जा पड़ा–तड़ाक–तड़ाक।''

''हे राम। सब मर्यादाओं का हनन।''

''राधे, पत्थर के बुत की तरह अवाक्। उसने उसी क्षण दुकान छोड़ दी थी। जाते वक्त उसने विरक्ति भाव से कहा था कि मैं तेरा मरे का मुँह भी न देखूंगा।''[7]

समाज में स्त्री की स्थिति सदैव ही दोयम दर्जे की रही है। पितृ सत्तात्मक समाज में उसके प्रति सदा ही उपेक्षा का भाव रहा है। कहानीकार ने स्त्री की समाज में हैसियत को 'कतार की बीबी' कहानी में रेखांकित करते हुए पति–पत्नी के संबंधों में आए अलगाव को भी मानवीय दृष्टि से देखा है–

''बाबा, इस घर में आकर मैं एक दिन भी चैन से न रही। बस कैसे–जैसे अपने दिन काट रही हूं।–– इस घर में मेरी कोई अहमियत नहीं। कुछ कह नहीं सकती। किसी मामले में कुछ बोल नहीं सकती। कभी कुछ बोली तो बस झिड़क दी जाती

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

हूं। –– बस यों समझ लो पैर की जूती हूं। जब चाहा पहन ली और जब चाहा निकाल दी गई। मालिक की दुआ कि बस बदली नहीं गई।–– कतार से लाखों लाया था। पर मेरे लिए सब धूल। मैने कभी कुछ नहीं देखा, कभी कुछ नहीं भोगा। दिनभर गृहस्थ के घाण में कोल्हू के बैल की तरह पीसकर बस दो बेला पेटभर अवश्य खाती हूं।–– दुर्भाग्य–– कोख का दुःख। एक भी लड़का हो जाता तो शायद जीवन को कुछ निजात मिल जाती, पर हाय रे नबीस।''[8]

राजनीतिक हलचलों से समाज में मानवीय संवेदनाएं भी प्रभावित होती हैं। मानव सामाजिक प्राणी है। समाज में अगर साम्प्रदायिक दंगे होते हैं तो मानव के मन में खीझ उत्पन्न होना स्वाभाविक है। आवश्यकता इस बात की है कि जब सभी कौमों ने मानवता, भ्रातृत्व, प्रेम, अहिंसा आदि सिद्धान्तों को समान रूप से स्वीकार किया है तो इनमें आपसी टकराहट क्यों है?

लेखक ने 'ढ़हती हुई दीवार' कहानी के माध्यम से समाज में सांप्रदायिक वैमनस्य की ओर संकेत किया है कि आज समाज में मानवीयता गौण हो गई है एवं धर्म–संप्रदाय प्रमुख हो गए हैं। धर्म अपने सिद्धान्तों से विचलित होता दिखाई दे रहा है। आज मानवीय संबंधों में एकता की अत्यंत आवश्यकता है। अखबार के पन्ने पलटते–पलटते भूषणजी सम्पादकीय तक पहुंचे, ''हमारी आज की जरूरत : कौमी एकता।'' उन्होंने सम्पादकीय उत्साहपूर्वक पढ़ा। अखबार एक ओर रखकर उन्होंने चाल का प्याला उठाया। जल्दी–जल्दी चाय का घूंट भरते हुए, वे विचार करने लगे, ''मानवता, भातृत्व, प्रेम, अहिंसा आदि सिद्धान्तों को तो लगभग सभी कौमों ने स्वीकारा है, फिर इनमें आपसी टकराहट क्यों?''[9]

कहानीकार ने स्त्री–पुरुष संबंधों को व्यापक रूप से चित्रित किया है, इसी संग्रह में 'अमानुषी' कहानी का यह उद्धवरण हमें संवेदना के स्तर पर गहराई तक आलोड़ित विलोड़ित तो करता ही है, मानवीय संबंधों का एक विशेष पहलू भी उजागर करता है–

''अलबम को एक ओर रखते हुए हीरा ने कहा, ''श्यामल की बीमारी के बाद एक दिन स्नेहलता मेरे पास आई। उसकी बातें सुनकर मुझे डर लगा। पति के शरीर से कमजोर और शक्ल से बदसूरत होने से यह घबराई हुई थी। उस दिन मुझे पता चला कि सचमुच इसका पति से लगाव बाहरी था। आंतरिक प्रेम विवाह के स्रोत भाव शून्य स्नेहलता में कहीं नजर नहीं आये।''[10]

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

कहानीकार हर्ष अपनी कहानियों में महानगरीय जीवन की विषमताओं का वर्णन भी खूब लिता है। बतौर 'सरपंची' कहानी शहरों में सामाजिक संबंधों में वह आत्मीयता नहीं होती जैसी की गांवों के जीवन में, ''बेटा गांव में एकेलोपन नीं होवे। वठै मेरा रिस्तां री नाल गांव–गलियां ही नीं, पूरै चौखले में है। सै रिस्ता–नाता, खेत–खलिहान, हवा–पानी म्हनैं गाँव वापस बुला रह्या। बस तू अर बीनणी बीच–बीच में बार–त्योंहार घर–गांव आकर सम्भालते रहना। अपनी राजी खुशी का समाचार देते रहना।''[11]

लेखकीय संवेदना मानवेतर संबंधों के प्रति भी रही है। 'आदमी का नाम' कहानी से निम्न उदाहरण इस संबंध में प्रासंगिक बन पड़ा है, ''चितकबरी मुँह और गर्दन से झबरू के तन को स्पर्श कर रही थी। आत्मीय स्पर्श से उत्साहित झबरू थनों की ओर मुड़ा। आवेश में उसने एक–दो बार मुँह मारा, पर व्यर्थ। थनों पर कोथली बंधी थी। धल्ली का मन पसीजा। उसने निश्चय किया कि आज दूध निकालते समय वह झबरू के लिए उसकी माँ के थनों में आध पाव दूध अवश्य छोड़ेगी।''[12]

रचनाकार समाज के बनते–बिगड़ते संबंधों को अपने कथानक के माध्यम से अभिव्यक्त करने में ही अपनी सफलता समझता है। हरदान हर्ष के पास वह भाषा कौशल और कहन की सामर्थ्य है जिसके माध्यम से वह अपने कृतित्व में सफल होता है, अपने संप्रेषण को संप्रेषित करता है।

लेखक के पास कथानक को पकड़ने की शक्ति भी है। आम आदमी के प्रति मानवीय दृष्टिकोण से विचार करते हुए 'मुँह दिखाई' कहानी में हरदान हर्ष लिखते हैं, ''भाई चेतराम, सैद्धान्तिक तौर पर मैं यह जानता था कि हमारे यहां सवर्णों द्वारा दूल्हे को घोड़ी पर न बैठने देना, हँसी–खुशी के मौकों पर बाजा न बजने देना, वर–वधू को घर तक सीधे वाहन से न आने देना हमारे मानवीय और संवैधानिक अधिकारों का हनन है। हमारे साथ अन्याय है। इस पीड़ा की अनुभूति मुझे अपनी शादी में हुई। पुराने जूते की कील आज चुभी। मैंने अपनी बेबसी को उस समय अनुभव किया जब मैं तुम्हारी भाभी के साथ बस से चौराहे पर उतर रहा था। तब से अब तक मैं बराबर आत्म मंथन कर रहा हूं। हमारे ऊपर सवर्णों के अत्याचार में हम भी बराबर के दोषी हैं। हमारे पुरखों की तरह हम भी दबे हुए हैं। हम में साहस की कमी है। हम कीड़े–मकोड़ों की तरह जैसे–तैसे जी लेना चाहते हैं। हम उनकी घोड़ी बने हुए हैं तो वे हम पर सवार होंगे

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

ही। पहले हमें उनकी घोड़ी बनना छोड़ना होगा। अपने पैरों पर सीधा खड़ा होना होगा। तब ही हम सिर उठाकर जी सकेंगे। मैं अब जागा तो आपको जगा रहा हूं। और, हम अपने पूरे समाज को जगाएंगे।''[13]

डॉ. आर. के. गरवा ने हरदान हर्ष की कहानियों पर अभिमत व्यक्त करते हुए लिखा है, ''हरदान हर्ष की कहानियां आत्मबोध से होती हुई मानवीय संवेदनाओं और जिजीविषा को अभिव्यक्त करती हैं। उनकी कहानियां इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर हमारे सोच और चरित्र का यथार्थवादी अंकन हैं।''[14]

यथार्थतः हरदान हर्ष की कहानियां अपने अंचल के जीवन को मानवीय संबंध अथवा संवेदना के धरातल पर उकेरती हैं। कहानियों में यथार्थता का पुट अधिक होने से वे हमारे आसपास की, अपनी कहानी अनुभव होती है। संबंधों में आए बदलाव को कहानीकार ने सशक्त ढंग से अभिव्यक्ति की है। मानवीय पक्ष में खड़ा कहानीकार मानवीय संवेदना का एक सशक्त सृजनशील कथाकार है।

संदर्भ

1. सुरेश सिन्हा, हिन्दी उपन्यास, पृ. 87
2. डॉ. मुकुन्द द्विवेदी, हिन्दी साहित्य : युग चेतना और पाठकीय संवेदना, पृ. 2
3. हिन्दी कहानी की विकास प्रक्रिया, पृ. 116
4. वही, पृ. 122
5. हरदान हर्ष, पिघलते हिमखण्ड, पृ. 5
6. वही, पृ. 15–16
7. वही, पृ. 26
8. वही, पृ. 30–31
9. वही, पृ. 41
10. वही, पृ. 69
11. हरदान हर्ष, धरती एक कॉस्मेज में, पृ. 1
12. वही, पृ. 22–23

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

13. वही, पृ. 42–43

14. साहित्यकारकार प्रस्तुति योजना, हरदान हर्ष, सं. भवानी सिंह, राजस्थान साहित्य अकादमी, से. 4, उदयपुर

प्रकाश नेभनानी
2–ज–22, हिरन मगरी, से. 5,
गायत्री नगर, उदयपुर–313002
मो. 9352760045